एनएचडीसी में हुआ कवि सम्मेलन

दिनांक 19.03.2019 को होली मिलन समारोह के रूप में एनएचडीसी द्वारा 'कवि-सम्मेलन' का आयोजन निगम मुख्यालय के सॉची सभागृह में किया गया। समारोह का शुभारंभ, कार्यक्रम अध्यक्ष व निगम के मुख्य कार्यपालक निदेशक, मो. ए.जी. अंसारी, मैडम अंसारी, उपस्थित प्रतिनिधि कविगण व मुख्य महाप्रबंधकगण द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।

तत्पश्चात ख्यातिनाम कवियों का शॉल, श्रीफल व पुष्पगुच्छ से स्वागत व सम्मान कर कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया गया। इसके पश्चात कवि एवं मंच संचालक, श्री धर्मेंद्र सोलंकी जी ने कार्यक्रम को हास्य व व्यंग्य से आगाज दिया।

कवि सम्मेलन के आरंभ में वरिष्ठ हास्य कवि श्री हरि विठ्ठल दुबे 'धूमकेतु' ने अपने अंदाज़ में हास्य एवं व्यंग्य से उपस्थित कार्मिक श्रोताओं को खूब हंसाया। उनके कुछ चुटीले व्यंग्य द्रष्टव्य हैं-

नेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहा कि
चोरी एक अदभुत कला है,
सभी चौकीदार बन गए, चोर करेंगें क्या ?
गहरी नींद में सो रहे हैं उसे जगा रहे हो।
उससे डरे हो क्या ?
हर शक्स जानता है जवानी में आप हैं,
लेकिन हकीकत जानता है केवल आइना,
कैसे कहॉ कितने पानी में आप हैं।

तदनंतर कवयित्री संगीता 'सरल' ने अपने अंदाज में सस्वर गज़लें पढ़ीं उनमें से कुछ द्रष्टव्य हैं-

ये मन जोगी हुआ पागल तुम्हारा नाम रटता है।
तुम्हारी याद में.....
सब मिल खेलो होली, सब मिल खेलो होली, किसी का चेहरा लाल किसी का पीला
केवल लगाओ गुलाल सजना, केवल लगाओ गुलाल .....

आपके प्यार का दिल दीवाना हुआ, मुस्कुराने का एक और बहाना हुआ।
तुमने घर का मेरे जो पता ले लिया, घर में मेरे खुशियों का आना जाना हुआ।।

खन खननखन खन, खन खननखन खन
रात भर बजते रहे मेरे कंगन
मोहना मोहना मोहना
तन हुआ मोहना, मन हुआ मोहना।
मैं उड़ने लगी पंछियों की तरह, बादलों की तरह, तितलियों की तरह.....

क्रम को जारी रखते हुए कवि सम्मेलन के संचालक श्री धर्मेंद्र सोलंकी जी ने होली पर बहुत ही सुंदर, सरस गीतिका सुनाई

रंग भरे हाथों से कर दूं गालों का उद्धार,
और मना लूं जी भरकर के मैं होली का त्यौहार।
..... मॉ बोली सब कुछ अच्छा हो जाएगा

और कवि सम्मेलन के दीर्घ अनुभवी महान शायर श्री ताज भोपाली ने अपने अंदाज में शेर अर्ज किए-

दलालों से दलाली कर रहे हैं, वतन की जेब खाली कर रहे हैं,
सिपाही सो गए अपने घरों में, लुटेरे रात काली कर रहे हैं.....
कफन देना पड़ा जिस वक्त मज़लूमों की लाशों को,
बच्चे अपनी अपनी मांओं की चादर उठा लाए।
कोशिशें करो कुछ तो दिल से दिल मिलाने की, हैं अभी बहुत राहें आसपास आने की।
आपको खबर क्या है लोग कैसे जिंदा हैं, सख्तियॉ कहॉ झेली आपने ज़माने की।

तत्पश्चात वीर रस के सशक्त हस्ताक्षर, लाल किले में अनेक बार ओजपूर्ण कविता पाठ करने वाले स्वनाम धन्य श्री मदन मोहन 'समर' जी ने नारी शक्ति से लेकर देश की रक्षा करने वाले सरहद पर तैनात वीर सैनिकों के बारे में अपनी ओजस्वी कविता पढ़ी।

मौजूदा हालातों पर उन्होंने एक कविता पढ़ी-
मरने की बात पुरानी है, अब बिना मरे हम मारेंगे।
अपनी अंगुली दिए बिना, दुश्मन के मुंड उतारेंगे।।
जिसे सुनकर सारा सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

फिर नारी शक्ति और उनकी क्षमताओं के बारे में बताते हुए कहा कि-
माहिर है सभी कलाओं में, यह सिद्ध किया गतिमान हुई,
संसद में बैठ विधान बनी, सरहद पर हिन्दुस्तान बनी।
मेंहदी में रंग रचा करके, थामी हैं सभी कमानें।
खेतों से सरहद तक देखो आ गईं तिरंगा ताने।।
तुम ही शिवाजी के हुंकारे, राणा की तलवार तुम्हीं,
तुम ही सुनीता विलियम्स वाली साहस भरी कहानी हो....
इंदिरा हो तुम लाल बहादुर, तुम ही अटल बिहारी हो,
स्वाभिमान की नई कहानी, पन्ना धाय तुम्हीं तो हो,
वंदे मातरम गीत तुम्हीं हो, जन गण मन अधिनायक हो।।

इस कवि सम्मेलन में श्री सुभाष सान्याल, मुख्य महाप्रबंधक (तकनीकी), श्री बनवारी लाल साबू, मुख्य महाप्रबंधक (वित्त), श्री विपिन कुमार गुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक (बी.डी.), श्री अशोक कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) और अन्य अधिकारीगण एवम् कर्मचारीगण ने खूब ठहाके लगाए व कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक तथा स्पृहणीय रहा।

कार्यक्रम का संचालन उपप्रबंधक(राजभाषा) श्री लालमणि शुक्ल तथा आभार/धन्यवाद ज्ञापन, वरि.प्रबंधक(मा.संसा.)प्रभारी श्री राजीव शर्मा एवं कार्यक्रम सहयोग हिंदी अनुवादक, श्रीमती स्वाति जैन ने किया। उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारीगण तथा कविगण को गुलाल लगाकर होली उत्सव की बधाइयों से समारोह का समापन किया गया। सभी लोगों के लिए हाई टी की भी व्यवस्था की गई थी जिसका उपस्थितों ने भरपूर लाभ उठाया। इस प्रकार यह कार्यक्रम सार्थक तथा सोद्देश्य संपन्न हुआ।

****

एनएचडीसी में हुआ कवि सम्मेलन का आयोजन

एनएचडीसी द्वारा दिनांक 05.03.2018 को होली मिलन समारोह के रूप में 'हास्य कवि-सम्मेलन' का आयोजन निगम मुख्यालय के साँची सभागृह में किया गया। समारोह का शुभारंभ, कार्यक्रम अध्यक्ष व निगम के मुख्य कार्यपालक निदेशक, मो. ए.जी. अंसारी एवम् उपस्थित कविगण व निगम के महाप्रबंधकगण द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया।

तत्पश्चात ख्यातिनाम कवियों का स्वागत व सम्मान कर कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया गया। इस दौरान वरिष्ठ कवि एवं मंच संचालक, श्री ब्रजकिशोर पटेल द्वारा कार्यक्रम को हास्य व व्यंग्य से प्रारंभ किया गया। कवि सम्मेलन के आरंभ में राकेश मालवीय (प्रखर) ने अपने अंदाज़ में उपस्थित श्रोताओं को खूब हंसाया। उनके कुछ चुटीले व्यंग्य द्रष्टव्य हैं :

नेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहा कि :
सांपों के एक अभ्यारण्य में, हमें पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण निकाल दिया गया।
और सजा के तौर पर सांपों के बीच डाल दिया गया था।
अब हम इन सांपों से खुद को डसवाकर खुद में जहर भर रहे हैं,
यानि फिर किसी साजिश की तैयारी कर रहे हैं।
और आज की शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया कि-
मैंने एक गधे से पूछा कि बच्चे बनोगे, थोड़े अच्छे बनोगे,
तब गधा बोला माफ करना भाईसाहब,
जितनी टेंशन में तुम्हारे बच्चे हैं, उससे तो हम गधे ही अच्छे हैं।

इसके पश्चात वरिष्ठ कवि गीतकार श्री राकेश वर्मा हैरत ने अपने गीत में सुनाया :
जब से बीबी घर में आई है, बदली- बदली दुनिया है मेरी,
पहले मैं ऐश से रहता था, अब ऐश में मेरी लुगाई है।
और अन्य व्यंग्य करते हुए कहा कि-
पहली वों रात थी दुल्हन थी चॉद सी, टकले दूल्हे के सर पर फेरती हाथ थी।
पागल हुआ समा झूम के कह उठा, चॉद से चॉद मिला, चॉद से चॉद मिला।।

और

नेता की आंखों में कुर्सी का ख़्वाब अनूठा रहता है,
जब तलक बैठ जाए न उसपे पसर वो रूठा रूठा रहता है।

तदनंतर कवयित्री श्रीमती लता स्वरांजली ने सर्वप्रथम गुरूवंदना की तत्पश्चात गज़ल पढ़ीं :

उन्होंने होली पर चंद पक्तियां कहीं कि-

चरागे इश्क बुझाती नहीं कभी होली, फिज़ा में खार उगाती नहीं कभी होली।
खुद अपने आप में जल जलके राख होती है, किसी के दिल को जलाती नहीं कभी होली।।

और

उसकी राखी दीवाली क्या होली है जिसकी साड़ी फटी पुरानी चोली है

तथा बेटियों के विषय में कहा कि-

क्यों करूं नेकियां जन्नत की जरूरत क्या है, अब ज्यादा इज्जत की जरूरत क्या है
मेरे घर में मेरे भगवान ने बेटी दे दी, अब मुझे कोई भी दौलत की जरूरत क्या है।

तथा अंत में श्री ब्रजकिशोर पटेल ने सच्चे मित्र के लिए शेर पढ़ा कि-

सच भले कड़वा हो दवाई के बराबर होता है,
हौंसला हो तो पहाड़ भी राई के बराबर होता है,
बडी किस्मत से मिलता है एक सच्चा दोस्त,
एक सच्चा दोस्त सौ भाई के बराबर होता है।

और पत्नी के लिए कहा कि-

पत्नी की हर बात को स्वीकार करना चाहिए,
पत्नी की हर बात का सत्कार करना चाहिए,
जिसको मोहब्बत करो उससे शादी करो या न करो
पर शादी जिससे करो उससे मोहब्बत जरूर करना चाहिए।

इस कवि सम्मेलन में श्री सुभाष सान्याल, महाप्रबंधक (तकनीकी), श्री बनवारी लाल साबू, महाप्रबंधक (वित्त), श्री विपिन कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक (बी.डी.), श्री अशोक कुमार, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व अन्य अधिकारीगण एवम् कर्मचारीगण ने खूब ठहाके लगाए व कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक तथा स्पृहणीय रहा।

उक्त समारोह का संचालन व आभार श्री राजीव शर्मा, प्रबंधक(मा.संसा.) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारीगण तथा कविगण को गुलाल लगाकर होली उत्सव की बधाइयों से समारोह का समापन किया गया।

****

एनएचडीसी में हुआ कवि सम्मेलन

राजभाषा विशेष कार्यों के अनुक्रम में दिनांक 05.12.2017 को अपराह्न 04.00 बजे एनएचडीसी के सॉची सभागृह में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ एनएचडीसी के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक निदेशक सर्वश्री मो. ए.जी. अंसारी ने महाप्रबंधकों और कवि जनो के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर किया। कार्यक्रम के प्रथम सोपान में एनएचडीसी की राजभाषा पत्रिका आरोहण-2017 का विमोचन किया गया।

तत्पश्चात ख्यातिनाम कवियों का स्वागत कर कवि सम्मेलन का श्रीगणेश किया गया। वरिष्ठ कवि एवं मंच संचालक श्री हरि विठ्ठल दुबे 'धूमकेतु' ने कार्यक्रम हास्य एवं व्यंग्य से प्रारंभ किया और सदैव खुश रहने पर जोर दिया। डॉ. अनु सपन ने मॉ सरस्वती की वंदना की। इसके पश्चात युवा कवि श्री यश धुरंधर जी ने अपनी ओजस्वी कविता से वीर रस का संचार कर दिया। तदनंतर डॉ. अनु सपन ने गज़ल पढ़ीं उनमें से कुछ द्रष्टव्य हैं-

मेरे हाथों की लकीरों में समाने वाले।
कैसे छीनेगे तुझे मुझसे जमाने वाले।।
मुश्किलों से हमें जूझना आ गया।
हारकर भी हमें जीतना आ गया।।
मेरे घर में चहकती रही बेटियॉ।
जमाने भर को खटकटी रही बेटियॉ।।

(कृ.प.उ.)

श्री ताज भोपाली ने बहुत ही उम्दा शेर सुनाए और श्रोताओं ने जमकर तारीफ की। उनके कुछ शेर काबिले-तारीफ हैं-

लम्हे भर का फासला भी गवारा नहीं मुझे, कोई इस जहां में आपसे प्यारा नहीं मुझे।
अपनी जरूरतों के तकादों के बावजूद, अहसान दोस्तों का गवारा नहीं मुझे।।

कफन देना पड़ा जिस वक्त मज़लूमों की लाशों को,
बच्चे अपनी अपनी मांओं की चादर उठा लाए ।

कोशिशें करो कुछ तो दिल से दिल मिलाने की, हैं अभी बहुत राहें आसपास आने की।
आपको खबर क्या है लोग कैसे जिंदा हैं, सख्तियॉ कहॉ झेली आपने ज़माने की।

फिर हरि विठ्ठल दुबे 'धूमकेतु' जी बहुत सारे प्रसंगों पर जी भर हंसाया उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हास्य रस का भरपूर रसास्वादन किया और हास्य कवि को खूब दाद दी। उनकी कुछेक पंक्तियॉ द्रष्टब्य हैं-

हर शक्स जानता है जवानी में आप हैं,
लेकिन हकीकत जानता है केवल आइना,
कैसे कहॉ कितने पानी में आप हैं।

दलालों से दलाली कर रहे हैं, वतन की जेब खाली कर रहे हैं,
सिपाही सो गए अपने घरों में, लुटेरे रात काली कर रहे हैं.....

नेताजी, तुम पर किया यकीं, तुम्हारी जय हो,
तुम्हीं ब्रहम के तीन, तुम्हारी जय हो,
गंदे नाले में पड़े रहते हो फिर भी दिखते क्लीन । ..... तुम्हारी जय हो

इस कवि सम्मेलन में सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने कार्यक्रम का पूरा आनन्द लिया। कार्यक्रम बहुत ही रोचक प्रेरणाप्रद तथा स्पृहणीय रहा।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी श्री लालमणि शुक्ल तथा आभार/धन्यवाद ज्ञापन, प्रबंधक(मा.संसा.) श्री राजीव शर्मा ने किया।कार्यक्रम के अंत में सभी लोंगों के लिए हाई टी की भी व्यवस्था की गई थी जिसका उपस्थितों ने भरपूर लाभ उठाया। इस प्रकार यह कार्यक्रम सार्थक तथा सोद्देश्य संपन्न हुआ।

.....